**रामायण**

नेपथ्य :- वनवास के समय एकबार माँ सीता और लक्ष्मण एकान्त में बैठे हुए थे। दोनों ही युवावस्था में थे। सीता का सौंदर्य अद्भुत था। आसपास का वातावरण सौंदर्य से भरपूर था। इतने में श्रीराम वहाँ आते हैं। सीता और लक्ष्मण को एकान्त में बैठे हुए देखकर वह लक्ष्मण से पूछते हैं

**राम :-**

**पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा, दृष्ट्वा स्त्रीणां च यौवनम् ।**

**त्रीणि रत्नानि दृष्ट्वैव, कस्य नो चलते मनः ।।**

भावार्थ:- हे भ्राता लक्ष्मण इस संसार मे ऐसा कौन है जिसका मन पुष्प, फल और स्त्री का यौवन- इन तीन रत्नों को देखकर चलित नहीं होता है?

**तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया:-**

**पिता यस्य शुचिर्भूतो, माता यस्य पतिव्रता।**

**उभाभ्यामेव संभूतो, तस्य नो चलते मनः।।**

भावार्थः- जिसका पिता पवित्र जीवनवाला हो, और जिसकी माता पतिव्रता हो, उनसे उत्पन्न पुत्र का मन चलित नहीं होता है।

**रामजी ने पुनः पूछा:-**

**अग्निकुण्डसमा नारी, घृतकुम्भसमः पुमान् ।**

**पार्श्वे स्थिता सुन्दरी चेत्, कस्य नो चलते मनः ।।**

भावार्थः- लक्ष्मण , सुँदर स्त्री अग्निकुण्ड के समान होती है और पुरुष घी के कुम्भ के समान होता है। ऐसी स्थिति में यदि ऐसी स्त्री सामने हो, तो किस का मन चलित नहीं होता है?

**लक्ष्मण का उत्तर:-**

**मनो धावति सर्वत्र, मदोन्मत्तगजेन्द्रवत् ।**

**ज्ञानाङ्कुशसमा, बुद्धिस्तस्य नो चलते मनः ।।**

भावार्थः- उन्मत्त हाथी की तरह मन हर जगह दौड़ता है लेकिन ज्ञानरूपी अंकुश के समान जिस की बुद्धि हैं उसका मन चलित नहीं होता हैं।

**तब राम खुश होकर कहते है :-**

**हे लक्ष्मण ! महाप्रज्ञ ! सुमित्रायाश्च नंदन !**

**इश्वाकोश्च कुलोत्पन्न ! ब्रम्हचारिन्नमो नमः ।।**

धन्य है भारत-भूमि! जहाँ लक्ष्मण जैसे चरित्रवान् रत्न उत्पन्न हुए हैं, जिनके उच्चतर चरित्र से यह धरा सदा पुनीत होती रही है।

प्रसंग 1

पात्र :- व्यक्ति 1, शंकराचार्य और उनके 2 शिष्य

नेपथ्य ;- आर्य जनों का कल्याण करने वाले एवं अद्वैत मार्ग का रक्षण करने वाले ,विद्वानों मे अग्रणी , ब्रमहवेत्ताओ मे शिरोमणि ,तपसो मे अग्रगण्य ऐसे योगींद्र आचार्य शंकर अपने शिष्यों के साथ त्रिवेणी संगम का दर्शन कर लौट रहे थे तब उन्हे विचित्र दृश्य दिखाई पड़ता है ।

**व्यक्ति 1 :-**

**गिरेरवप्लुत्य गतिः सतांयः प्रामाण्यमान्नायगिरामवादित् ॥**

**यस्य प्रसादात त्रिदिवौकसोपि प्रपेदिरे प्राक्तनयज्ञभागान् ॥ ७४ ॥**

**सोऽयं गुरोरुन्मथन प्रसक्तं महत्तरं दोषमपाकरिष्णुः ॥**

**अशेषवेदार्थविदास्तिकत्वात तुषानलं प्राविशदेष धीरः ॥ ७५ ॥**

अर्थ :- जिस पंडित ने पर्वत स गिरकर वेदों के भाष्यको सिद्ध किया है ऐसे धीर कुमारीलभट्ट अपने गुरु के सिद्धांतों का खंडन करने के पाप को हटाने के लिए अपने आप को भूसे की आग मे जला रहे है ।

प्रसंग 2

पात्र :- व्यक्ति 1,2,3

**व्यक्ति 2 :- कः अयं तपस्वी अग्निवत प्रकाशते ।**

**तेषां परिचयः कः ???**

अर्थ ;- आग के समान चमकने वाले यह तपस्वी कोण है, इनका परिचय क्या है ??

**व्यक्ति 3** :-

**अयं त्यधीता खिलवेद मंत्रः कूलंकषालोडितसर्वतंत्रः ।।**

**नितांतदूरी कृत दुष्टतंत्र स्त्रैलोक्यविभ्रामितकीतियंत्रः॥ ७६ ॥**

अर्थ :- इन्होंने समस्त वेदों का अध्ययन किया है ,सब शस्त्रों का मंथन किया है । दुष्ट शस्त्रों को दूर उखाड़ फेका है तथा त्रैलोक्य मे अपने कीर्ति का विस्तार किया है ।

**व्यक्ति 1 :-**

**धूमायमानेन तुषानलेन संदह्यमानेपि वपुष्यशेषे ।।संदृश्यमानेन मुखेन वाष्पपरीतपद्मश्रियमादधानं ॥ ७८ ॥**

अर्थ :- आग से खूब धुआ निकाल रहा था जो कुमारीलभट्ट कों जला रहा था । उनका केवल मुख दिख रहा था ।

प्रसंग 3

नेपथ्य :- कुमारीलभट्ट का यह अग्नि बलिदान देखकर शंकराचार्य व्यथित हो गए और उन्होंने कुमारीलभट्ट से पुछा

**शंकराचार्य :- हे पण्डित वेदभाष्यं सिद्धं त्वया महात्मन्।**

**किं कारणं तवायास्य आत्मदाहस्य विस्तरेण वद॥**

अर्थ :-हे पण्डित आप ने वेदो के भाष्य को सिद्ध किया है किंतु आपके इस आत्मदहन का कारण क्या है यह में जानना चाहता हु। ऐसी कौनसी घटना है जो आपको अस्वस्थ कर रही है। कृपया आप यह बात मुझे विस्तार में समझाए ।

**कुमारीलभट्ट :-**

**निरास्यमीशं श्रुतिलोकसिद्धं श्रुतेः स्वतो मात्वमुदा हरिष्यन्।**

**न न्निन्हुवे येन विना प्रपंचः सौख्याय कल्पेत न जानु विद्वन् ॥ ८९ ॥**

**तथागता क्रांतमभूदशेषं स वैदिकोध्वा विरली बभूव ।।**

**परीक्ष्य तेषां विजयाय मार्ग प्रावर्ति संत्रातुमनाः पुराणं ॥ ९० ॥**

अर्थ :- इस जगत के कण कण मे परमेश्वर का वास है। यह सुंदर शरीर यह जीवन परमेश्वर की दि हुई अप्रतिम भेट है । और नर से नारायण बनना यही इस जीवन का परम उद्देश्य है ऐसा कहकर जीवन की ओर देखने का विधायक दृष्टिकोण देनेवाले वेदों का मार्ग इसी भूमि पर विरल हो गया। ऐसा क्यों?

**सशिष्यसंघाः प्रविशन्ती राज्ञां गेहं तदादि स्ववशे विधातुं ॥**

**राजा स्मदीयोजिरमस्मदीयं तदाद्रियध्वं न तु वेदमार्गम् ॥ ९१ ॥**

**वेदोप्रमाणं बहुमानबाधात परस्परव्याइतिवाचकत्वात् ।**

**एवं वदंतो विचरंति लोके न क़ाचिदेषां प्रतिपत्तिरासीत् ॥ ॥९२॥**

अर्थ :- यह जीवन दुखमय है , यह देह भी और संसार भी क्षणिक है , आपको मुक्ति पनि होगी तो इस संसार का त्याग करो । ऐसे जीवन के प्रति घृणा लेकर बौद्ध संघ भारतवर्ष के राज्य के पास गया । राजा को वश मे करके उन्होंने घर घर जाकर वेदों और भगवान के ऊपर लोगों की श्रद्धा को हटा दिया । मूर्तिपूजा का बौद्धिक खंडन करके घर घर जाकर प्रचार किया की वेद अप्रामान्य है । ईश्वर जैसा कोई नहीं यह कहते हुए वो लोग देशभर घूमे ।

**अवादिषं वेदविघातदक्षैस्तान्नाशकं जेतुमबुध्यमानः ॥**

**तदीयसिद्धांतरहस्यवार्डीन् निषेध्यबोधाद्वि निषेध्यबाधः ॥९३॥**

अर्थ :- इन वेद विघातक शास्त्रों का खंडन करके मैंने बौद्ध दर्शन का अभ्यास किया उनके साथ शास्त्रार्थ करके उनको परजित किया लेकिन फिर भी दिव्य जीवन समझाने वाली वैदिक संस्कृति की गरिमा मै वापस खड़ी नहीं कर पाया इसीलिए यह आत्मदहन कर रहा हु ।

**शंकराचार्य :-**

**निश्चितं भव निश्शङ्को वैदिकी संस्कृतिर्भवेत् ।**

**निराशावादबौद्धं तु नाशयिष्येऽहमाश्रुभिः ॥**

**व्रतविचारान् नाशयित्वा वैदिकदर्शनं पुनः ।**

**घरोघरे प्रचारिष्ये प्रतिज्ञां धारयाम्यहम् ॥**

**संस्कृतेर्मातरं हृष्टां कृत्वा हर्षयाम्यहम् ।**

**प्रतिज्ञामकरं सत्यं वचनं ते मया कृतम् ॥**

**वैदिकीं संस्कृतिं लोके प्रचारयामि सर्वथा ।**

**कुमारिलस्य यो यस्य बलिदानं प्रशंसये ॥**

**अर्थ :-** आप निश्चिंत हो सकते हैं कि वैदिक संस्कृति फिर से खिलेगी । मैं इस निराशावादी बौद्ध दर्शन को दूर करके अपनी पारलौकिक वैदिक संस्कृति के आँसू पोछूंगा । मैं संन्यास के इन विचारों को नष्ट करने और एक बार फिर वैदिक जीवन के भव्य दर्शन को घरों घरों में लेकर जाने का वादा करता हूं। मैं संस्कृति मां का रोना रोककर उन्हें फिर से खुश कर दूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आपसे किया गया वादा पूरा करूंगा। मैं वैदिक संस्कृति को घर-घर लेकरजाऊंगा और कुमारिल भट्ट के आत्म-बलिदान को सार्थक करूंगा।